

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१९/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिती में स्थित हो जाए... सभी अपने मूलस्वरूप देखे... देखते जाइए... बुद्धि के आँखों द्वारा आत्मा के मूलस्वरूप को देखते जाइए... एक चमकता सितारा... मूलस्वरूप... जिससे लाइट और माइट निकल रही है... अनुभव करें.. मूलस्वरूप... को उस लाइट को देखे... उसकी माइट का अनुभव करे... यही मैं हूँ... यही मेरा सत्य स्वरूप है.. मूलस्वरूप... मूलस्वरूप... मूलस्वरूप... यही आत्मा का सत्य स्वरूप है...

जितना जितना आत्माएं अपनी सत्य स्वरूप में आती जाएगी उतना उतना वह वर्तमान में अपना पार्ट श्रेष्ठ प्रकार से बजा पाएगी। क्योंकि वर्तमान सत्य है, भूतकाल और भविष्य सत्य नहीं है, क्योंकि आप आत्मा को पता ही नहीं है, भूतकाल में आपने जिया या आपके किसी अस्तित्व ने पार्ट बजाया, आपके अंदर के कोई मायावी स्वरूप ने पार्ट बजाया। और जब तक वर्तमान में आत्मा मूलस्वरूप में रहे पार्ट नहीं बजाती, तब तक उसका आने वाला भविष्य भी सत्य नहीं होगा। इसलिए सभी आत्माएं जितना जितना मूलस्वरूप का अभ्यास करते जाएंगे। उतना उतना वह अपना वर्तमान, भूतकाल और भविष्य सत्य बना पाएंगे। कभी कभी कोई भूतकाल की कोई बातें याद करके सुखी होते हैं या दुखी होते हैं पर यह जानना जरूरी है कि भूतकाल में जिसने सुख भोगा या जिसने दुख भोगा क्या वह मैं ही आत्मा थी या मेरे द्वारा किसी और ने पार्ट बजाया मेरे शरीर का इस्तेमाल करके। जो जो इच्छाएं उत्पन्न हुई उसका क्या परिणाम स्वरूप, किस प्रकार से पार्ट बजवाया गया, क्या यह मुझ आत्मा की मर्जी थी, या किसी मायावी अस्तित्व की इच्छा थी, जिसके परवश होकर पार्ट बज गया, जिसके परवश होकर विपरीत संस्कार इमर्ज हो गए और पार्ट बजने के बाद जब रियलाइज हुआ क्या उस समय वह रियलाइजेशन की

स्टेट में आत्मा को सुख हुआ या दुख हुआ। अगर विपरीत पार्ट बज गया होगा तो जरूर दुख ही लगेगा कि यह हमसे ऐसे कैसे हुआ, हम हमारे किन्ही संस्कारों वश रहकर ऐसे कैसे पार्ट बजाया? पर अभी जो बज गया वह तो बज गया उसका हिसाब किताब आत्मा को ही करना पड़ेगा। पर अभी आत्मा के हाथ में क्या है? वर्तमान में हर पल हर सेकंड आत्मा अपने मूलस्वरूप स्थिति में रहके, जागृत रहके अपने हर पार्ट को बजाएगी तब ही उसका आने वाला भविष्य सुखकारक होगा। अगर आत्मा चाहती है कि भविष्य में उससे सुखकारक ही कर्म हो दूसरों के प्रती और स्वयं के प्रती, भविष्य में आत्मा से बेस्ट पार्ट बज जाये, अगर यह आत्मा चाहती है, तो उसे अपना वर्तमान ठीक करना पड़ेगा। जो बीत गया उसे कभी भी किसी भी हालत में ठीक नहीं कर सकते क्योंकि वह पार्ट बज गया, अभी हाथ में है वर्तमान और भविष्य।

इसलिए हर कोई आत्मा वर्तमान में अपने संकल्पों को देखें, विचारों को देखें, वृत्ति को देखें, भाव को देखें, स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा होने वाले कर्मों को देखें, दृष्टि को देखें, वाणी को देखें, हाथों द्वारा किये जाने वाले कर्मों को देखें, अपनी स्थिति को देखें, कि वर्तमान में मुझ आत्मा का यह सब कुछ किस प्रकार से पार्ट इनमें से सभी का बज रहा है। अगर स्थूल कर्मेन्द्रियों से कर्म ठीक है, पर बोल ठीक नहीं, तो भी आत्मा को भुगतना पड़ेगा। अगर बाहर सभी स्थूल कर्मेन्द्रियों से कर्म ठीक है, बोल ठीक है, दृष्टि ठीक है, किन्तु वृत्ति अशुद्ध है, फिर भी आत्मा को भुगतना पड़ेगा। अगर सब कुछ ठीक है और भाव ठीक नहीं तो भी घाटा पड़ेगा। अगर सब कुछ ठीक है पर जो मन में सोच चलती है विचारों के रूप में जो बाहरी कर्मेन्द्रियों से दिखती नहीं है, पर जो सदा अंदर चलती रहती है, वह विचार अगर ठीक नहीं है तो भी घाटा होगा। और संकल्पों की बात करें, तो आप से जो जो संकल्प उठते हैं अगर उन संकल्पों में आप स्वयं का या दूसरों का, समाज का, किसी के प्रती भी अगर कोई विपरीत परिणाम होगा तो भी आत्मा को भुगतना ही पड़ेगा।

हर किसी का हिसाब अलग है, किसी के प्रती बुरे संकल्प चलने के बाद का हिसाब अलग बनता है, किसी के प्रती बुरी सोच विचार चलाने का हिसाब अलग बनता है, किसी के प्रति गलत वृत्ति या गलत भाव रखने का हिसाब अलग बनता है, किसी के प्रति गलत वाइब्रेशन क्रिएट करने का हिसाब अलग

बनता है, फिर गलत बोल, गलत कर्म हर किसी का हिसाब अपना अपना है। पर ऐसे नहीं है कि इनमें से किसी का हिसाब का खाता कम होता है या किसी का हिसाब का खाता ज्यादा होता है। एक है विपरीतता से हिसाब किताब बना लिया और साथ ही साथ दुसरो के प्रति संकल्प, विचार, वाइब्रेशन, वृत्ति, भाव, दृष्टि, बोल, कर्म, स्थिति, सब को लेके जो कुछ भी विपरीत क्रिएट किया होगा, वह विपरीत एज ईट इज, आपके साथ होकर रहेगा। फिर वो इस जन्म में हो या आने वाले अगले कल्प में कोई जन्म में हो। क्योंकि जो कुछ विपरीतता किसी के प्रति क्रिएट हो गई है, वह विपरीतता एक ऊर्जा है, जो सामने वाले को दुख और दर्द देती हैं। पर वह ऊर्जा नष्ट नहीं होती, वही ऊर्जा किसी ना किसी जन्म में जिसने विपरीतता को बनाया, फिर संकल्पों के रूप में हो या विचारों के या कर्मों के, किसी भी रूप से वह ऊर्जा उसही के पास रिटर्न आएंगी, फिर वो भविष्य में किसी भी जन्म में आ सकती है। इसलिए उर्जा नष्ट नहीं होती, जिसकी है उसके पास रिटर्न आकर ही रहती है। यह परमात्मा का लॉ है, युनिवर्स में।

इसलिए सभी आत्माएं अगर मूलस्वरूप में रहकर व्यवहार करेंगे, अपने मूलस्वरूप का अटेंशन रखेंगे कि मैं तो आत्मा हूँ, बाहरी, नाम, मान, शान, मान-अपमान, यह सब कुछ बाहरी हैं। मुझ आत्मा को, कोई भी हिला नहीं सकता। मैं आत्मा सभी गुणों से और शक्तियों से भरपूर हूँ। मुझसे कोई कैसा भी व्यवहार करें, पर मैं आत्मा तो बेहद सुन्दर रचना हूँ। मुझे किसी के भी बोल का, कर्मों का, विचारों का, संकल्पों का प्रभाव कभी नहीं पड़ सकता। क्योंकि मैं कोई संकल्प, कोई विचार, कोई वाइब्रेशन, कोई बोल, दृष्टि, कर्म यह मैं नहीं हूँ। यह तो सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा एक्सप्रेस होने वाली उर्जाएं हैं। मैं तो मूल स्वरूप हूँ। अगर आत्माएं इस स्मृति में सदा रहेगी, तो उनके साथ आने वाली जो भी परिस्थिति होगी, जो उन्ही के कार्मिक अकाउंट्स से उनके पास उर्जा के रूप में आ रही है। वह आत्मा मूलस्वरूप में रहने के कारण, मूलस्वरूप के स्मृति में रहने के कारण, आने वाले सभी कार्मिक अकाउंट को बहुत सहेजता से चुकू कर पाएगी। क्योंकि सामने से कुछ भी आए, पर जब आत्मा अपनी स्थिती में होती है, तो उसके पास ज्ञान और समझ सदा इमर्ज रहती है, कि यह मेरे ही पाप है, इनको मैं स्वीकार करती हूँ, और खुशी-खुशी से उस कर्मबंधन को आत्मा चुकू कर पाएगी।

पर अगर आत्मा स्थिती में नहीं होगी, तो वह यही सवाल पूछेगी, उसके मायावी अस्तित्व के रूप के द्वारा, की मेरी क्या गलती हुई? मैंने तो कुछ भी नहीं किया था, मुझे तो ऐसे लगा, मैंने तो ऐसा नहीं सोचा था। मेरा तो यह भाव नहीं था। मेरे मन में ऐसे बिल्कुल भी नहीं चल रहा था। मैं तो कितनी अच्छी हूँ फिर भी मेरे साथ ही ऐसा क्यों ? यह सब सवाल उठाने वाली है, मायावी अस्तित्व क्योंकि आत्मा अपनी स्थिती में नहीं है। जब आत्मा अपनी स्थिती में होती है, तो कभी भी कोई भी मायावी अस्तित्व इमर्ज नहीं हो सकता। सदा ध्यान में रखना। अगर कोई अपनी गलती हो या ना हो पर उसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो समझ जाना बहुत कड़ा मायावी अस्तित्व बन गया है। अभी आत्मा को बहुत ताकत लगानी पड़ेगी, उस अस्तित्व को हटाने के लिए। इसलिए संगम युग में आत्मा का एक ही स्लोगन सदा रहे, “मैं गलत हूँ”। जितना जितना आत्माएं इसे पक्का करेगी, उससे उसके सभी मायावी अस्तित्व हटते जाएंगे, क्योंकि मायावी अस्तित्व को पसंद नहीं होता कि कोई उसे गलत कहे या गलत साबित करे और यह तब ही होगा जब आत्मा अपने स्थिति में रहेगी और हर परिस्थिति को सदा स्वीकार करेगी। मेरे साथ जो हो रहा है, यह मेरे ही पाप हैं। किन्ही जन्मों में या इस ही जन्म में मेरे से ही कुछ गलत हुआ था, जो की अभी मेरे साथ हो रहा है क्योंकि जो भी गलत होता है वह मायावी अस्तित्व के कारण होता है क्योंकि आत्मा स्थिति में नहीं होती।

जब आत्मा अपनी स्थिति में रहती है तो कभी भी गलती नहीं हो सकती। गलती का कारण है मायावी अस्तित्व कि उपस्थिति । अहंकार भी गलत अस्तित्व है, जो भ्रम का है। मोह भी गलत अस्तित्व है, भ्रम का है। हर कोई अपनी चेकिंग करे, कि क्या दिल से आप आत्मा स्वीकार करते हो, कि आप गलत हो। हम गलत हैं, यह मुख से बार बार बोलने की ज़रूरत नहीं है, पर हम गलत हैं यह अपने अंदर, अपने से विचार करने की ज़रूरत है।

जो आत्मा दिल से स्वीकार करती हैं कि यहाँ पर मेरे साथ जो कुछ भी हो रहा है, वह मेरी ही गलतियों के कारण है इसलिए मैं गलत हूँ। यहाँ पर हर आत्मा सदा ध्यान रखे कि यह संगम युग है, आपके सभी कार्मिक अकाउंट को पूर्ण रूप से सेटल करने का। अगर कोई आत्मा अपने अकाउंट को

पूर्ण रूप से सेटल नहीं कर पायी तो शरीर छोड़ने के बाद धर्मराजपुरी में अकाउंट को सेटल करवाया जाएगा।

इसलिए सभी आत्माएं अपने कर्मों की जिम्मेवारी लें। अपने कर्मों को लेकर कभी भी, किसी को भी, सपने में भी किसी और को ब्लेम ना करें; क्योंकि आपने अगर अनकॉन्ससियस्ली भी किसी के ऊपर ब्लेम किया, तो फिर से नया अकाउंट आपने बना लिया। इसलिए, "जो कुछ हो रहा है यह मेरे ही पाप हैं, यह मुझे चुकू करने हैं और इसमें ही मेरा कल्याण है" — जब हर कोई हर परिस्थिति को दिल से स्वीकार करेगा, तब ही उसके सारे कर्म-बंधन चुकू हो जाएंगे और आत्मा को अपनी कल्याण-यात्रा के लिए पूर्ण रूप से खुला रास्ता मिलता जाएगा।

कर्म के बंधन से भागना नहीं है, क्योंकि जितना आप भागने की कोशिश करेंगे, उतने ही वह आपके पास रिटर्न आएंगे; क्योंकि वह एक ऊर्जा है, उसको चुकू करना ही होगा। इसलिए वर्तमान में हर किसी के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखना जरूरी है। अपनी वृत्ति, अपने भाव, अपने विचार सभी के प्रति शुद्ध होने जरूरी हैं। अपने कर्म, अपने व्यवहार, अपने बोल, हर कुछ शुद्ध रहना जरूरी है, क्योंकि तब ही भविष्य में सुखकारक पार्ट बजा पाएंगे। और जितना-जितना आत्मा सब कुछ यहाँ अपने स्थूल शरीर में रहकर ही सेटल करेगी, उतना जल्दी आत्मा अपनी कल्याण-यात्रा को शुरुआत कर पाएगी।

क्योंकि कल्याण तो आत्मा का होना है, पर आत्मा के पीछे किसी भी रूप से कोई कर्म-बंधन नहीं रहने चाहिए; क्योंकि कर्म-बंधन ही या कर्म-संबंध हो, वह सारे धागे हैं जो आत्मा को पीछे खींचेंगे। इसलिए सभी आत्माएं मूलस्वरूप का जितना-जितना अभ्यास करते जाएंगे, उतना-उतना उनके सभी कर्म-बंधन, सभी कर्म-संबंध — जो कि कल्याण की यात्रा के लिए जरूरत नहीं हैं, वह सारे चुकू होते जाएंगे, आत्मा स्वतंत्र होगी अपने कल्याण की यात्रा के लिए।

इसलिए मूलस्वरूप का अभ्यास सभी आत्माओं को करना जरूरी है अपने आपको स्वतंत्र करने के लिए। कोई भी आत्मा हो किसी कर्म-बंधन में, कर्म-संबंध में अपने को अटककर रखकर कभी भी

अपना कल्याण नहीं कर पाएगी; फिर वह कर्म-बंधन स्थूलता में हो या बुद्धि से सूक्ष्म रूप से पकड़े हुए हो। हर कोई जागृत हो जाए, आप स्वतंत्र हो और आपको ही आपकी कल्याण-यात्रा करनी होगी।

आज का सभी के लिए होमवर्क है कि हर कोई आत्मा चेक करे कि क्या आपके साथ जो कुछ भी हो रहा है या हुआ था, यह आपके ही किन्हीं गलत कर्मों का हिसाब-किताब है? क्या आप इसे दिल से स्वीकार करते हैं? हर कोई आत्मा अपनी दिल से चेकिंग करे कि आप गलत हो, इसे स्वीकार करते हैं? “मैं गलत हूँ” - इस संगम युग में जो आत्माएं दिल से स्वीकार करेंगी, उन्हीं का संपूर्ण रूप से कल्याण हो जाएगा।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी आत्माएं ज्ञान को सदा प्रैक्टिकली समझें। इमोशनली कभी भी ज्ञान को नहीं समझा जा सकता, इमोशन माना माया। सभी सदा इसे ध्यान रखना।